Impact Factor (QJIF): 8.38 E-ISSN: 2583-7206, P-ISSN: 3049-2432

International Journal of All Subject Research

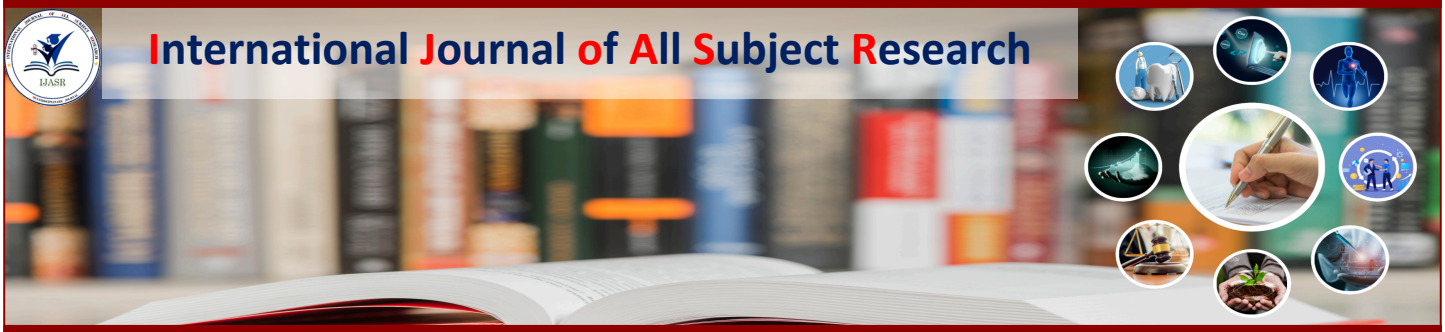

Received: 23/February/2026 **IJASR:** 2026; 5(2):82-84 **Accepted:** 10/April/2026

शिक्षा के क्षेत्र में कला एवं शिल्प की प्रासंगिकता और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर इसका प्रभाव विश्लेषणात्मक अध्ययन

[*1]दिनेश मुझाल्दा और [2]सत्य नरायन यादव

[*1, 2]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावां (खरगोन), मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में 'कला एवं शिल्प' (Art and Craft) की अपरिहार्य भूमिका और इसकी बहुआयामी उपयोगिता का विश्लेषण करता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में, जहाँ संज्ञानात्मक बोझ बढ़ रहा है, कला एक ऐसे सेतु के रूप में कार्य करती है जो रटने की प्रवृत्ति को 'करके सीखने' (Learning by Doing) के अनुभवजन्य ज्ञान में परिवर्तित करती है। यह शोध इस तथ्य को रेखांकित करता है कि कला केवल सौंदर्यबोध तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के सूक्ष्म क्रियात्मक कौशल (Fine Motor Skills), मानसिक एकाग्रता और भावनात्मक स्थिरता के विकास में मौलिक योगदान देती है। अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के अनुरूप 'कला समेकित शिक्षा' (Art Integrated Learning) किस प्रकार अन्य शैक्षणिक विषयों, जैसे—गणित, विज्ञान और भाषा के शिक्षण को अधिक सुगम और रोचक बनाती है। शोध में कला के मनोवैज्ञानिक पक्ष पर भी प्रकाश डाला गया है, जो विद्यार्थियों में स्व-अभिव्यक्ति का आत्मविश्वास जाग्रत कर तनाव प्रबंधन में सहायक सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध पत्र भारतीय सांस्कृतिक विरासत और लोक कलाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के बीजारोपण की आवश्यकता पर बल देता है। अंततः, यह अध्ययन शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं को यह सुझाव देता है कि कला को पाठ्येतर गतिविधि (Co-curricular activity) के बजाय पाठ्यक्रम के एक अनिवार्य और अंतर्निहित भाग के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए, ताकि एक सृजनात्मक, नवाचारी और संवेदनशील भावी पीढ़ी का निर्माण संभव हो सके।

मुख्य शब्द: कला समेकित शिक्षा, सर्वांगीण विकास, सृजनात्मकता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सूक्ष्म क्रियात्मक कौशल, संज्ञानात्मक विकास।

1. प्रस्तावना

"कला" शब्द की परिधि अत्यंत व्यापक है; यह मानवीय संवेदनाओं, अनुभवों और कल्पनाओं की वह उच्चतम अभिव्यक्ति है जो शब्दों की सीमा से परे होती है। प्रसिद्ध दार्शनिकों और शिक्षाविदों का मानना है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल सूचनाओं का संग्रहण नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का सर्वांगीण परिष्कार है। इस परिप्रेक्ष्य में, कला एवं शिल्प (Art and Craft) शिक्षा के क्षेत्र में एक उत्प्रेरक की भूमिका निभाते हैं। पारंपरिक रूप से कला को एक अतिरिक्त या पाठ्येतर गतिविधि (Co-curricular activity) माना जाता रहा है, किंतु आधुनिक शैक्षिक शोध यह सिद्ध करते हैं कि कला सीखने की एक अनिवार्य और मौलिक प्रक्रिया है। यह विद्यार्थी के मस्तिष्क के दाएं और बाएं दोनों भागों को सक्रिय कर तार्किक और सृजनात्मक सोच के मध्य संतुलन स्थापित करती है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में, प्राचीन काल से ही 'चौसठ कलाओं' का वर्णन मिलता है, जो जीवन कौशल और शिक्षा के अंतर्संबंधों को दर्शाती हैं। वर्तमान में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने इस दिशा में एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। यह नीति 'कला समेकित शिक्षा' (Art Integrated Learning) पर विशेष बल देती है, जिसका अर्थ है कला को अन्य विषयों जैसे गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और भाषाओं के साथ एकीकृत करना। जब एक विद्यार्थी ज्यामिति के सिद्धांतों को 'ओरिगेमी' के माध्यम से या ऐतिहासिक घटनाओं को 'नाट्य रूपांतरण' के माध्यम से सीखता है, तो वह ज्ञान स्थायी और आनंदमय हो जाता है।

प्रस्तुत शोध का मूल आधार यह है कि कला एवं शिल्प केवल सौंदर्यपरक शिक्षण नहीं है, बल्कि यह सूक्ष्म क्रियात्मक कौशल (Fine Motor Skills), आलोचनात्मक चिंतन और समस्या समाधान की क्षमता विकसित करने का सशक्त माध्यम है। डिजिटल युग की चुनौतियों और बढ़ते मानसिक तनाव के बीच, कला विद्यार्थियों को स्व-अभिव्यक्ति का एक सुरक्षित मार्ग प्रदान करती है। शिक्षा में कला की उपयोगिता का अध्ययन करना न केवल अकादमिक दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि एक संवेदनशील और नवाचारी समाज के निर्माण हेतु भी अनिवार्य है। यह शोध पत्र इन्हीं विभिन्न आयामों का विश्लेषण करने और शिक्षा में कला के महत्त्व को पुनः स्थापित करने का एक प्रयास है।

2. शोध के उद्देश्य (Objectives of Research)

- विद्यार्थियों के मानसिक और बौद्धिक विकास में कला की भूमिका का आकलन करना।

***Corresponding Author:** दिनेश मुझाल्दा

- कला एवं शिल्प के माध्यम से कठिन विषयों को सरल बनाने की प्रक्रिया को समझना।
- विद्यार्थियों की सृजनात्मकता (Creativity) और सूक्ष्म क्रियात्मक कौशल (Fine Motor Skills) के विकास का अध्ययन।

3. शिक्षा में कला एवं शिल्प की उपयोगिता (Main Analysis)

शिक्षा के क्षेत्र में कला एवं शिल्प की भूमिका केवल हस्तकौशल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थी के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को परिष्कृत करने का एक वैज्ञानिक आधार है। इसका विस्तृत विश्लेषण निम्नलिखित चार स्तंभों के अंतर्गत किया जा सकता है:

अ). संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development): मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कला मस्तिष्क के 'दाएं गोलार्ध' को सक्रिय करती है, जो रचनात्मकता और अंतर्ज्ञान के लिए उत्तरदायी है। जब विद्यार्थी किसी कोरी सतह पर चित्र उकेरता है या मिट्टी से कोई आकृति बनाता है, तो वह अनजाने में ही आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking) की प्रक्रिया में संलग्न होता है। उसे रंगों के चयन, आकृतियों के संतुलन और उपलब्ध संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग जैसे निर्णय लेने होते हैं। यह प्रक्रिया विद्यार्थियों को 'लीक से हटकर सोचने' (Out-of-the-box thinking) के लिए प्रेरित करती है, जो भविष्य में जटिल समस्याओं के समाधान हेतु एक नवाचारी दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक सिद्ध होती है।

ब). मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक लाभ (Psychological Benefits): कलात्मक गतिविधियाँ एक प्रकार की 'आर्ट थेरेपी' के रूप में कार्य करती हैं। शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा के इस युग में जहाँ विद्यार्थी मानसिक दबाव का सामना कर रहे हैं, वहाँ कला उन्हें तनावमुक्ति का एक शांत गलियारा प्रदान करती है। यह एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा विद्यार्थी अपनी उन दमित भावनाओं, चिंताओं या सुखद अनुभूतियों को व्यक्त कर पाते हैं, जिन्हें वे शब्दों में नहीं कह सकते। जब उनके द्वारा बनाया गया कोई शिल्प या चित्र पूर्ण होता है, तो उससे प्राप्त उपलब्धि की भावना उनके आत्मविश्वास (Self-esteem) को अभूतपूर्व स्तर पर बढ़ाती है।

स). अंतःविषय संबंध (Interdisciplinary Connection): कला समेकित शिक्षा (Art Integrated Learning) का मुख्य उद्देश्य विषयों की नीरसता को समाप्त करना है। कला के माध्यम से अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रूप देना संभव होता है। उदाहरण के लिए, गणित की कठिन ज्यामितीय अवधारणाओं (Geometric Concepts) को 'ओरिगेमी' (कागज मोड़ने की कला) के माध्यम से सरलता से सिखाया जा सकता है। इसी प्रकार, विज्ञान में मानव शरीर की संरचना को क्ले-मॉडलिंग के जरिए या इतिहास के विभिन्न युगों को चित्रों और भित्ति-चित्रों के माध्यम से पढ़ाना विद्यार्थियों के स्मृति पटल पर गहरा प्रभाव छोड़ता है। यह पद्धति रटने की अपेक्षा समझने पर बल देती है।

द). सांस्कृतिक चेतना (Cultural Awareness): भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र में हस्तशिल्प और क्षेत्रीय कलाएँ एक जीवित इतिहास हैं। जब पाठ्यक्रम में मधुबनी, वारली, टेराकोटा या पारंपरिक बुनाई जैसे विषयों को स्थान दिया जाता है, तो विद्यार्थी अपनी जड़ों से जुड़ते हैं। यह उनमें सांस्कृतिक गौरव और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना जाग्रत करता है। स्थानीय शिल्पकारों की कला का सम्मान करना सीखने से विद्यार्थियों में श्रम के प्रति गरिमा और विविधता के प्रति सम्मान विकसित होता है, जो उन्हें एक जिम्मेदार वैश्विक नागरिक बनाता है।

4. सूक्ष्म क्रियात्मक कौशल का विकास (Development of Fine Motor Skills)

शिक्षा में कला एवं शिल्प का तकनीकी पक्ष विद्यार्थियों के शारीरिक और स्नायु तंत्र के विकास से गहराई से जुड़ा है। मिट्टी के काम (Clay Modeling), सूक्ष्म पेंटिंग, कैंची से कागज की सटीक कटिंग या बुनाई जैसी गतिविधियाँ सूक्ष्म क्रियात्मक कौशल (Fine Motor Skills) को निखारने का प्राथमिक साधन हैं। इन गतिविधियों के दौरान हाथों और उंगलियों की छोटी मांसपेशियों का निरंतर अभ्यास होता है, जो मस्तिष्क के साथ उनके समन्वय को मजबूत करता है।

यह अभ्यास सीधे तौर पर विद्यार्थी की लेखन कला (Handwriting) और नियंत्रण क्षमता को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, आँख और हाथ का समन्वय (Eye-Hand Coordination) बेहतर होने से विद्यार्थी प्रयोगात्मक कार्यों में अधिक दक्ष बनते हैं। यह कौशल न केवल कला तक सीमित है, बल्कि भविष्य में चिकित्सा (सर्जरी), इंजीनियरिंग और तकनीकी क्षेत्रों में आवश्यक सटीकता (Precision) की नींव रखता है।

5. एकाग्रता और धैर्य का संवर्धन (Enhancing Concentration and Patience)

किसी भी कलाकृति या शिल्प को पूर्णता तक पहुँचाना एक समय लेने वाली और साधनापूर्ण प्रक्रिया है। आधुनिक युग में जहाँ 'इंस्टेंट ग्रेटिफिकेशन' (तत्काल संतुष्टि) की प्रवृत्ति बढ़ रही है, वहीं शिल्प कला विद्यार्थियों को निरंतरता का पाठ पढ़ाती है। एक जटिल पेंटिंग या हस्तशिल्प मॉडल बनाने के लिए घंटों की एकाग्रता और अटूट धैर्य की आवश्यकता होती है।

यह प्रक्रिया एक प्रकार के 'सक्रिय ध्यान' (Active Meditation) के रूप में कार्य करती है, जो विद्यार्थियों को मानसिक विक्षेपों से दूर कर उनके चित्त को स्थिर करती है। जब एक बच्चा अपनी कृति को धीरे-धीरे आकार लेते देखता है, तो उसमें न केवल एकाग्रता (Concentration) बढ़ती है, बल्कि विफलता को स्वीकार कर उसे सुधारने का धैर्य भी विकसित होता है। यह मानसिक शांति उनके अन्य शैक्षणिक विषयों के अध्ययन में भी गुणात्मक सुधार लाती है।

6. विषयों के सरलीकरण में उपयोगिता (Utility in Simplifying Subjects)

कला एवं शिल्प कठिन और अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त एवं दृश्य रूप प्रदान करने का सबसे प्रभावी उपकरण है। इसे 'कला समेकित अधिगम' के रूप में निम्नलिखित विषयों में देखा जा सकता है:

- **गणित:** ज्यामितीय आकृतियों (Shapes), सममिति (Symmetry) और कोणों को केवल सूत्रों के बजाय कागज मोड़ने की कला (Origami) या 3D मॉडल के माध्यम से समझाना अधिक प्रभावी होता है। इससे विद्यार्थियों में 'स्थानिक समझ' (Spatial Understanding) विकसित होती है।
- **विज्ञान:** मानव शरीर के अंगों की जटिल संरचना, सौर मंडल या रासायनिक बंधों (Chemical Bonds) को चित्रों और क्ले-मॉडल के माध्यम से समझना सीखने की प्रक्रिया को चिरस्थायी बनाता है। प्रयोगात्मक रिकॉर्ड्स में रेखाचित्र बनाने से अवलोकन क्षमता (Observation Skills) बढ़ती है।
- **इतिहास एवं भूगोल:** ऐतिहासिक स्मारकों के प्रतिरूप (Models) बनाना या मानचित्रों में विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों को रंगों और बनावट (Textures) के माध्यम से दर्शाना विद्यार्थियों को इतिहास और भूगोल के करीब लाता है। यह संस्कृति और परिवेश को केवल रटने के बजाय उसे दृश्यात्मक रूप में अनुभव करने का अवसर देता है।

7. सृजनात्मकता: कला एवं शिल्प का आधार (Creativity: The Core of Art and Craft)

सृजनात्मकता केवल नए विचारों का जन्म नहीं है, बल्कि उपलब्ध संसाधनों और ज्ञान को एक नवीन एवं उपयोगी दृष्टिकोण से प्रस्तुत

करने की क्षमता है। शिक्षा में कला एवं शिल्प का सबसे प्रमुख योगदान विद्यार्थी की मौलिक सृजनात्मकता को जाग्रत करना है। शिक्षाविद् केन रॉबिन्सन के अनुसार, "सृजनात्मकता उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि साक्षरता।" कला के माध्यम से जब एक विद्यार्थी अपनी कल्पना को भौतिक रूप (चित्र या शिल्प) देता है, तो वह 'अपसारी चिंतन' (Divergent Thinking) का प्रयोग करता है, जहाँ एक ही समस्या के कई संभावित समाधान खोजे जाते हैं।

सृजनात्मकता का विकास विद्यार्थियों में 'नवाचार' (Innovation) की प्रवृत्ति को जन्म देता है। कला एवं शिल्प की कक्षा में कोई 'सही' या 'गलत' उत्तर नहीं होता; यह स्वतंत्रता बच्चों को प्रयोग करने और अपनी गलतियों से सीखने का साहस देती है। जब बच्चा विभिन्न रंगों, बनावटों और आकारों के साथ प्रयोग करता है, तो उसकी मानसिक लचीलापन (Mental Flexibility) बढ़ती है। यह सृजनात्मक ऊर्जा केवल कला तक सीमित नहीं रहती, बल्कि विज्ञान में नए प्रयोग करने, गणित के कठिन प्रश्नों को वैकल्पिक विधियों से हल करने और भाषा लेखन में मौलिकता लाने में भी परिलक्षित होती है। सृजनात्मकता विद्यार्थी को एक 'उपभोक्ता' के बजाय एक 'सृजक' (Creator) बनाती है। डिजिटल युग में, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तेजी से बढ़ रही है, मानवीय सृजनात्मकता ही वह गुण है जो विद्यार्थियों को विशिष्ट बनाए रखेगा। अतः शिक्षा में कला एवं शिल्प के माध्यम से सृजनात्मकता का पोषण करना केवल एक शैक्षणिक आवश्यकता नहीं, बल्कि भविष्य की चुनौतियों के लिए एक अनिवार्य जीवन कौशल है।

8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और कला समेकित शिक्षा (NEP 2020 & Art Integrated Learning)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली के इतिहास में एक युगांतरकारी दस्तावेज़ है, जो रटने की पारंपरिक पद्धति को समाप्त कर 'अनुभवात्मक अधिगम' (Experiential Learning) पर बल देता है। इस नीति का एक मुख्य स्तंभ 'कला समेकित शिक्षा' (Art Integrated Learning) है। एनईपी 2020 स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है कि कला और संस्कृति न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक हैं, बल्कि ये संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ाने और देश की अर्थव्यवस्था व पहचान को सुदृढ़ करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

नीति के अनुसार, कला को पाठ्यक्रम के एक अलग हिस्से के रूप में देखने के बजाय, इसे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए। इसका उद्देश्य शिक्षा को आनंदमयी बनाना और विद्यार्थियों में भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System) के प्रति गर्व की भावना जाग्रत करना है। NEP 2020 'बहुविषयक दृष्टिकोण' (Multidisciplinary Approach) की वकालत करती है, जहाँ विज्ञान के छात्र के लिए भी संगीत या चित्रकला को एक मुख्य विषय के रूप में चुनने की स्वतंत्रता हो। यह नीति स्थानीय हस्तशिल्प और लोक कलाओं को पाठ्यक्रम में शामिल कर 'वोकेशनल एक्सपोजर' (Vocational Exposure) प्रदान करने पर जोर देती है, जिससे विद्यार्थी प्रारंभिक अवस्था से ही व्यावहारिक कौशल और श्रम की गरिमा को समझ सकें। अंततः, यह नीति कला को एक ऐसे माध्यम के रूप में देखती है जो विद्यार्थी के शारीरिक, बौद्धिक और भावनात्मक पक्षों के बीच संतुलन स्थापित कर उसे एक 'पूर्ण मानव' के रूप में विकसित करती है।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध का समग्र विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य में कला समेकित शिक्षा (Art Integrated Learning) केवल एक शिक्षण पद्धति नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का आधारभूत स्तंभ है। शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ है कि जब कला को पाठ्यक्रम के साथ एकीकृत किया जाता है, तो यह सीखने की प्रक्रिया को बोझिल होने से बचाकर उसे आनंदमयी और स्थायी बनाती है।

विद्यार्थी के संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) के संदर्भ में, कला मस्तिष्क की उन क्षमताओं को सक्रिय करती है जो तार्किक और विश्लेषणात्मक चिंतन के साथ-साथ कल्पनाशीलता में भी वृद्धि करती हैं। वहीं, शिल्प आधारित गतिविधियाँ सूक्ष्म क्रियात्मक कौशल (Fine Motor Skills) को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिससे विद्यार्थियों में शारीरिक नियंत्रण और कार्य के प्रति सटीकता (Precision) विकसित होती है। यह कौशल न केवल लेखन कला में सुधार लाता है, बल्कि भविष्य के व्यावसायिक कौशलों के लिए भी एक मजबूत नींव तैयार करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) का विजन भी इसी दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है, जो विषयों के बीच की कठोर सीमाओं को समाप्त कर कला को एक अनिवार्य शैक्षणिक उपकरण के रूप में मान्यता देता है। यह नीति सृजनात्मकता (Creativity) को साक्षरता के समान ही महत्व देती है, क्योंकि आज के नवाचारी युग में केवल सूचनाओं का ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन सूचनाओं को रचनात्मक ढंग से प्रयोग करने की क्षमता अधिक आवश्यक है। कला एवं शिल्प शिक्षा का पूरक अंग न होकर उसकी आत्मा है। यह विद्यार्थियों को एक संवेदनशील, आत्मविश्वासी और मौलिक विचारक के रूप में गढ़ती है। यदि हम वास्तव में एक ऐसी भावी पीढ़ी का निर्माण करना चाहते हैं जो न केवल बौद्धिक रूप से प्रखर हो बल्कि व्यावहारिक रूप से कुशल और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भी हो, तो कला को शिक्षा के केंद्र में स्थापित करना अनिवार्य है। भविष्य की शिक्षा का लक्ष्य केवल अंक प्राप्त करना नहीं, बल्कि कला के माध्यम से जीवन जीने की कला सीखना होना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. Chauhan SS. *Innovations in Teaching Learning Process*. Vikas Publishing House; 2010.
2. Dewey J. *Art as Experience*. Minton, Balch & Company; 1934.
3. Eisner EW. *The Arts and the Creation of Mind*. Yale University Press; 2002.
4. Gardner H. *Multiple Intelligences: New Horizons in Theory and Practice*. Basic Books; 1993.
5. Lowenfeld V, Brittain WL. *Creative and Mental Growth*. 8th ed. Prentice Hall; 1987.
6. Ministry of Education. *National Education Policy 2020*. Government of India; 2020. Available from: https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
7. National Council of Educational Research and Training. *National Curriculum Framework 2005*. NCERT; 2005.
8. National Council of Educational Research and Training. *Art Integrated Learning: Guidelines*. NCERT; 2019.
9. Piaget J. *The Origins of Intelligence in Children*. International Universities Press; 1952.
10. Read H. *Education Through Art*. Pantheon Books; 1958.
11. Robinson K. *Out of Our Minds: Learning to be Creative*. Capstone; 2011.
12. UNESCO. *Road Map for Arts Education*. World Conference on Arts Education; 2006.
13. Vygotsky LS. *The Psychology of Art*. MIT Press; 1971.
14. Winner E. *How Art Works: A Psychological Exploration*. Oxford University Press; 2018.